वोयटेक

एक सैनिक भालू

(सत्यकथा)

गैरी पॉलिन

वोयटेक

एक सैनिक भालू (सत्यकथा)

गैरी पॉलिन

सितंबर 1939 में जर्मनी और रूस ने पोलैंड पर आक्रमण किया. ग्रेट ब्रिटेन और फ्रांस ने पोलैंड के साथ एक समझौता किया जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटेन ने जर्मनी पर युद्ध की घोषणा की.

कुछ ही महीनों के भीतर अनुमानित 15 लाख पोलिश पुरुष और उनके परिवारों को, साइबेरिया में रूसी श्रम शिविरों में काम करने के लिए ले जाया गया. सौभाग्य से 1941 की गर्मियों में हिटलर ने रूस पर आक्रमण किया जिसका मतलब था कि अब जर्मनी के खिलाफ मित्र राष्ट्रों के साथ रूस और पोलैंड मिलकर साथ देंगे. रूस को भयानक नुकसान हो रहा था इसलिए उसे पोलिश सोवियत समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर होना पड़ा. उसके बाद पोलिश सेना का गठन किया गया.

रूस ने श्रमिक शिविरों में रह रहे पोलिश पुरुषों, महिलाओं और बच्चों को रिहा कर दिया. बच्चों सहित लगभग 120,000 लोग वहां इकट्ठे हुए. यह आंकड़ा इस बात का कुछ संकेत देता है कि शिविरों में 2 साल से भी कम समय में कितने लोग मारे गए थे. लोगों के इस समूह के सबसे योग्य पुरुष और महिलाओं ने ही नई सेना का निर्माण किया.

रूस खुद अपने आप युद्ध से संघर्ष कर रहा था और उसके पास इस सेना को लैस करने और उसे खिलाने की सामर्थ नहीं थी. उसके लिए ग्रेट ब्रिटेन ने सहायता प्रदान की. नई सेना के एक हिस्से को फारस (ईरान) ले जाने की अनुमति दी गई थी. उसके लिए ब्रिटिश सरकार ने भोजन, उपकरण और हथियारों की आपूर्ति की.

ईरान में पहाड़ों के निकट हमदान नामक एक शहर के पास यात्रा करते समय सैनिकों को सड़क के किनारे एक युवा लड़का मिला. लड़का भूखा था; सिपाहियों को उस पर तरस आया और उन्होंने उसे अपना बचा हुआ भोजन दिया. लड़के के पास एक बोरी थी. जब सैनिकों ने बोरी खोली तो उसमें से एक छोटे भालू के बच्चे को देखकर वे हैरान रह गए. लड़के ने बताया कि भालू की मां को शिकारियों ने गोली मार दी थी. लड़के ने भालू का बच्चा उन सैनिकों को दे दिया.

विशेष रूप से एक सैनिक, जिसका नाम प्योत्र (पीटर) था, उसको भालू का बच्चा अपनी माँ के रूप में मानने लगा. सैनिकों ने शावक का नाम वोजटेक (वोयटेक) रखा. वोयटेक के बारे में और अधिक पढ़ने के लिए आप जी. मॉर्गन की पुस्तक "सोल्जर बेयर" पढ़ सकते हैं.

मोंटे कैसीनो की लड़ाई को द्वितीय विश्व युद्ध में सबसे कठिन लड़ाइयों में से एक माना जाता है. मित्र दलों द्वारा तीन अलग-अलग लड़ाइयाँ लड़ी गईं लेकिन फिर भी वे पहाड़ों को नहीं जीत सके. अंत में, सात दिन की लड़ाई के बाद, जनरल व्लाड्सलॉ एंडर्स की कमान के तहत पोलिश सेकेंड आर्मी कॉर्प ने ऐसा किया. वोयटेक और सैनिक अक्टूबर 1946 में विनफील्ड कैंप, बर्विकशायर पहुंचे. नवंबर 1947 में प्योत्र (पीटर) वोयटेक को एडिनबर्ग चिड़ियाघर ले गया. वो वोयटेक के साथ उसके पिंजरे में गया. उसके तुरंत बाद प्योत्र (पीटर) लंदन चला गया.

वोयटेक 16 साल तक चिड़ियाघर में रहा. इतनी स्वतंत्रता के अभ्यस्त होने के बाद वो चिड़ियाघर में खुश रहेगा इसकी सम्भावना कम ही थी. चिड़ियाघर के निदेशक ने लिखा, "मुझे कभी इतना अफ़सोस नहीं हुआ जितना कि मुझे उस जानवर को देखकर हुआ, जिसने इतनी आज़ादी और मस्ती का आनंद लिया था, और अब वो एक पिंजरे में कैद था."

वोयटेक के पिछले कुछ साल उसके लिए काफी दुखद थे. अंत में, 2 दिसंबर 1963 को वोयटेक की 21 वर्ष की आयु में हत्या कर दी गई. उसे एक बूढ़े सैनिक की मौत दी गई ... उसे गोली मार दी गई.

ग्रेट ब्रिटेन, पोलैंड के लिए युद्ध में उतरा था. पोलिश सैनिकों और वायुसैनिकों ने हमारे साथ मिलकर लड़ाई लड़ी थी. लेकिन दुखद रूप से याल्टा में फरवरी 1945 में एक थके हुए प्रधान मंत्री चर्चिल और एक मरते हुए राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने स्टालिन की मांगों पर सहमति व्यक्त की और पोलैंड और अन्य पूर्वी यूरोपीय देशों का साथ देना छोड़ दिया. फिर 1989 में ही पोलैंड ने अपनी स्वतंत्रता वापस हासिल की.

अँधेरा था, बहुत गहरा अँधेरा था.

वो ठंडा था. वो भूखा था.

वो अकेला था.
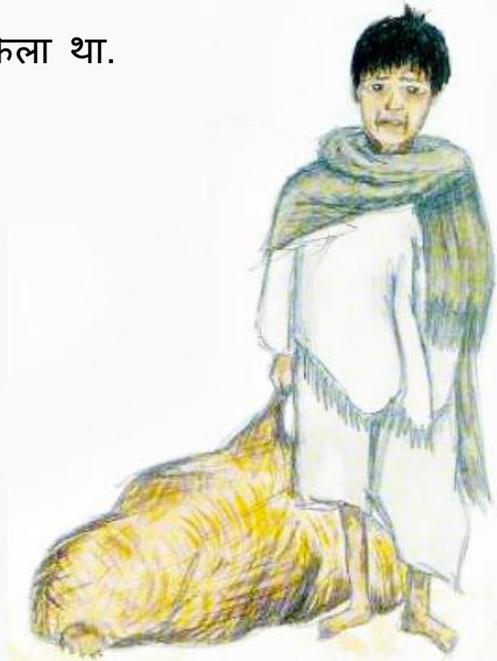
कोई बोरी खोल रहा था.

तभी एक अनाथ भालू का बच्चा अंधेरे में से बाहर निकला.

उसने एक सिपाही का हाथ चाटा.

सिपाहियों ने भालू के बच्चे के लिए दूध पीने की एक बोतल बनाई और उससे भालू के बच्चे को दूध पिलाया. रात में भालू शावक गर्मी के लिए सैनिकों के कोट के अंदर छिपकर सो गया. सैनिकों ने उसे वोयटेक के नाम से बुलाया.

बेस कैंप पर वोयटेक को एक अजीब सी आवाज सुनाई दी.. उसने चारों ओर देखा. . . एक ताड़ के पेड़ में ऊपर की ओर. . . उसने कुछ हिलता हुआ देखा ... फिर एक बीज ने उसके सिर पर आकर वार किया!

एक नन्हा बंदर उस पर बीज फेंक रहा था!

उस बंदरिया का नाम काशा था. वो बहुत शरारती थी और मौका मिलते ही वोयटेक को चिढ़ाती और परेशान करती थी.

एक दिन, शिविर में दौड़ते समय वोयटेक एक रस्सी पर फिसल गया और कुछ चीज़ नरम पर गिरा. . . डालमेटियन कुत्ता चौंका और अपने पैरों पर छलांग लगाई, लेकिन कुछ सेकंड के बाद कुत्ता और वोयटेक दोनों एक दूसरे की नाक चाट रहे थे. उस कुत्ते का नाम टॉमी था और जल्द ही वो और वोयटेक बहुत अच्छे दोस्त बन गए.

सुबह-सुबह, वोयटेक शिविर का निरीक्षण करता था. रसोई को देखना उसे सबसे पसंद था. रसोई के कुक के पास उसके खाने के लिए हमेशा कुछ-न-कुछ 'स्वादिष्ट' ज़रूर होता था.

वोयटेक को सैनिकों के साथ कुश्ती खेलना पसंद था. सैनिक अक्सर भालू के बच्चे को खुश करने के लिए उसे मात देने देते थे. सैनिकों को वोयटेक से बहुत लगाव हो गया था.

वोयटेक विभिन्न सैनिक ठिकानों पर उपकरण ट्रांसपोर्ट करने के लिए सैनिकों के साथ-साथ जाता था. वोयटेक को देखकर अक्सर स्थानीय लोग चौंक जाते थे. उसे जीप और ट्रक में आगे बैठना अच्छा लगता था!

धीरे-धीरे वोयटेक का डील-डौल बड़ा हुआ और वो बढ़ता गया!

उसे अभी भी सैनिकों के साथ कुश्ती करने में आनंद आता था.

हालाँकि, अब वो अपनी शर्तों पर कुश्ती लड़ता था. . .

वो सैनिकों की जेबें भी खाली कर सकता था!!
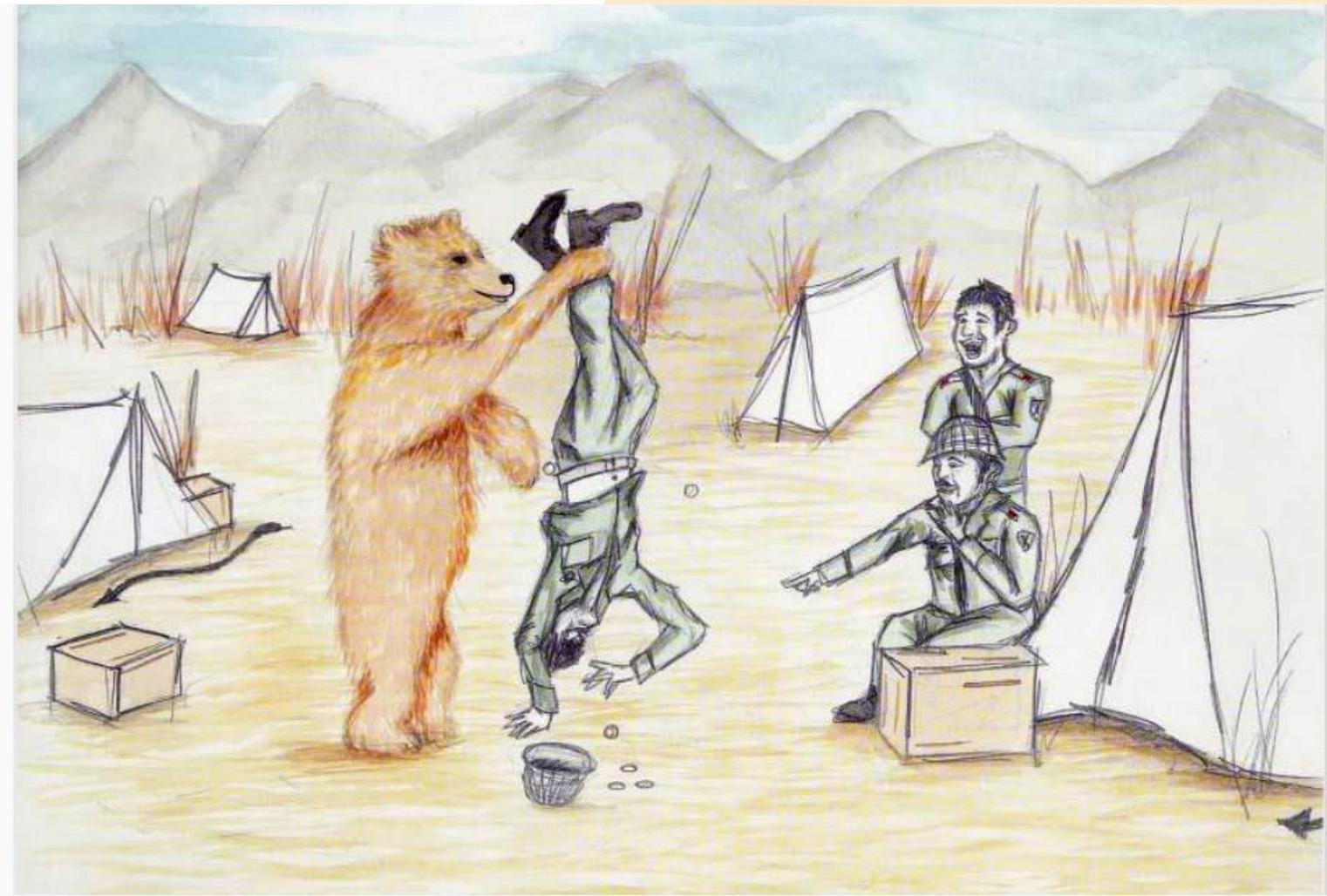
अंत में, वो दिन आया जब वोयटेक और सैनिकों को इटली के लिए रवाना होना पड़ा. पर मिस्र को क्रॉस करते समय वोयटेक समुद्र में बहुत बीमार पड़ गया. अंत में, वे इटली के शहर टोरंटो में उतरे.

वोयटेक और उसके साथ के सैनिक, अग्रिम पंक्ति में लड़ रहे सैनिकों को, गोला-बारूद और उपकरण की सप्लाई करते थे. कभी-कभी वोयटेक के ट्रक पर लूफ़्टवाफ़े (जर्मन वायु सेना) हमला करता था.
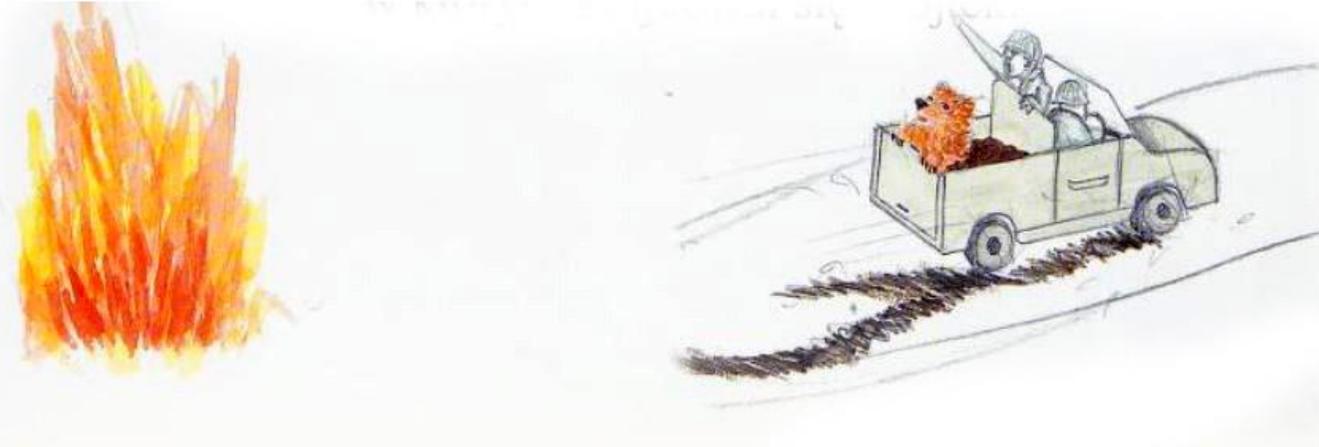
वोयटेक, सैनिकों की गोला-बारूद और सप्लाई उतारने में मदद करता था.

वो एक बहुत भारी काम था!! उसे सिपाहियों ने बहुत चकित होकर देखा.

वोयटेक के कार्य से सैनिक बहुत प्रभावित हुए और जल्द ही सेना के ऊंचे अफसरों ने भी उसके काम को पहचाना. उनके पास कंपनी बैज थे जिनमें वोयटेक को स्टीयरिंग व्हील की पृष्ठभूमि में, एक शेल (बारूद का गोला) ले जाते हुए दिखाया गया था.

जल्द ही युद्ध समाप्त हो गया और फिर वोयटेक और सैनिक ग्लासगो के लिए रवाना हुए. सैनिकों और उनके विशेष हीरो वोयटेक को बधाई देने के लिए हजारों की संख्या में लोग सड़कों पर कतार लगाकर खड़े हुए. . वोयटेक.

वोयटेक और सैनिक स्कॉटलैंड के एक शिविर में रहते थे, जो कि बर्विक-ऑन-ट्वीड नामक शहर के पास था. पर अब सैनिकों के लिए सेना छोड़ने और अपने परिवारों के पास वापिस लौटने और कोई दूसरी नौकरी खोजने का समय आ गया था. उससे वोयटेक बहुत उदास था. अब वो कहाँ रहेगा?
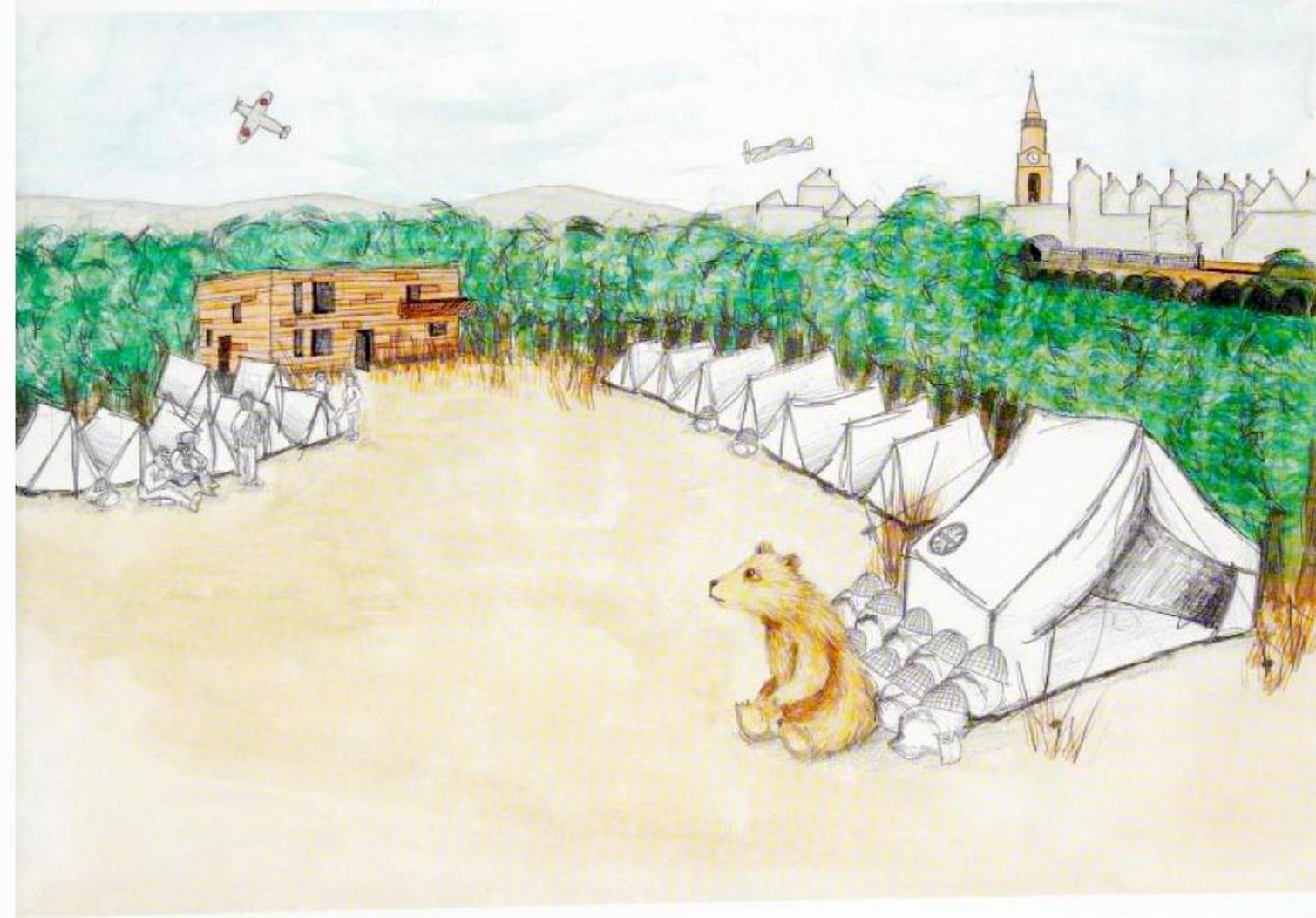
वोयटेक के दोस्त जा रहे थे और उसके कैंप को स्थाई रूप से बंद किया जा रहा था.

वो अब कहाँ जा सकता था?
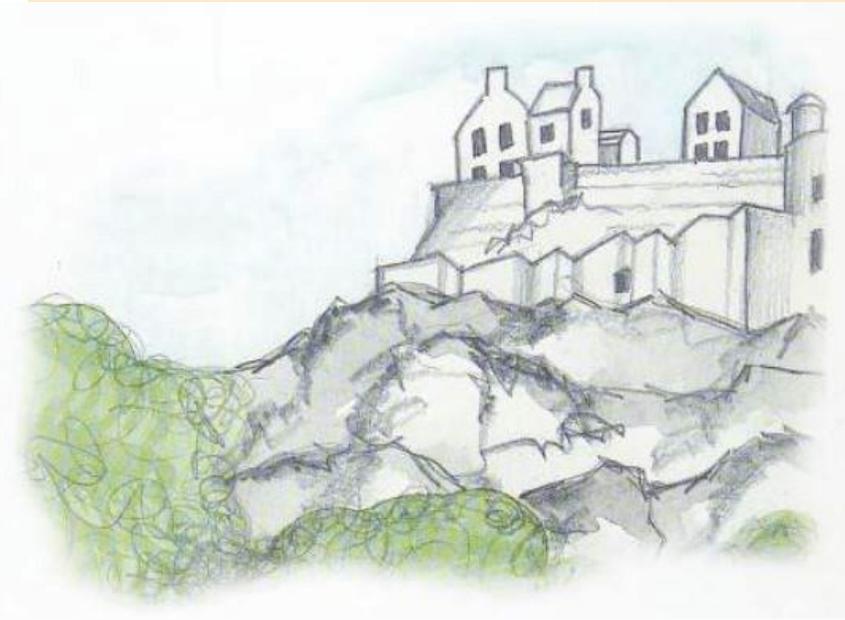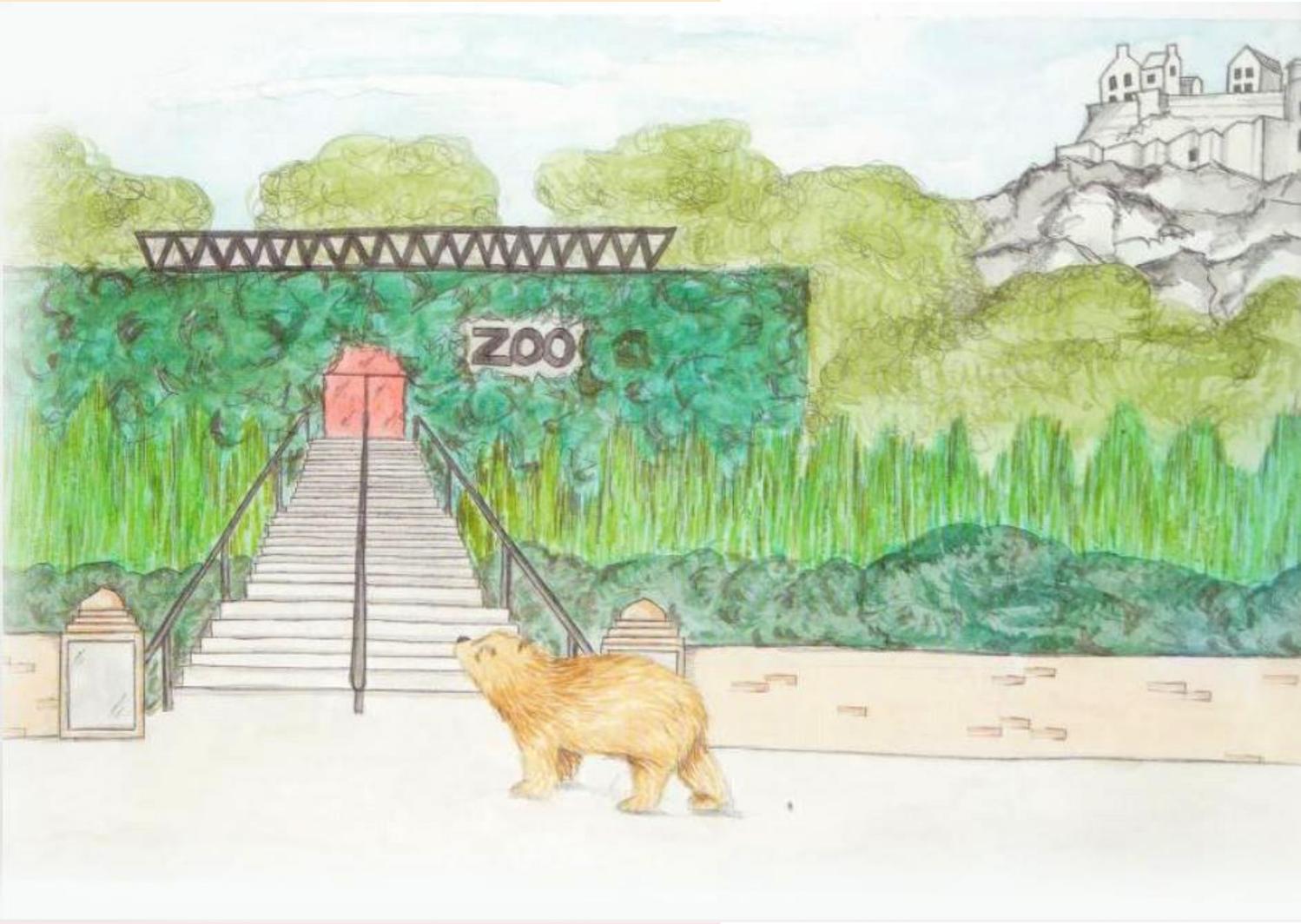
एडिनबर्ग चिड़ियाघर ने वोयटेक को एक नया घर देने की पेशकश की.

वोयटेक चिड़ियाघर में रह सकता था और वहां नए दोस्त बना सकता था.

वोयटेक अपने नए घर को लेकर बहुत उत्सुक था. वो वहां अपनी सीट पर बैठकर बहुत खुश था. वोयटेक बहुत लोकप्रिय था और हजारों लोग उससे मिलने आते थे. वोयटेक 16 साल तक चिड़ियाघर में रहा. जब वो 21 साल का था तब उसकी मृत्यु हो गई.
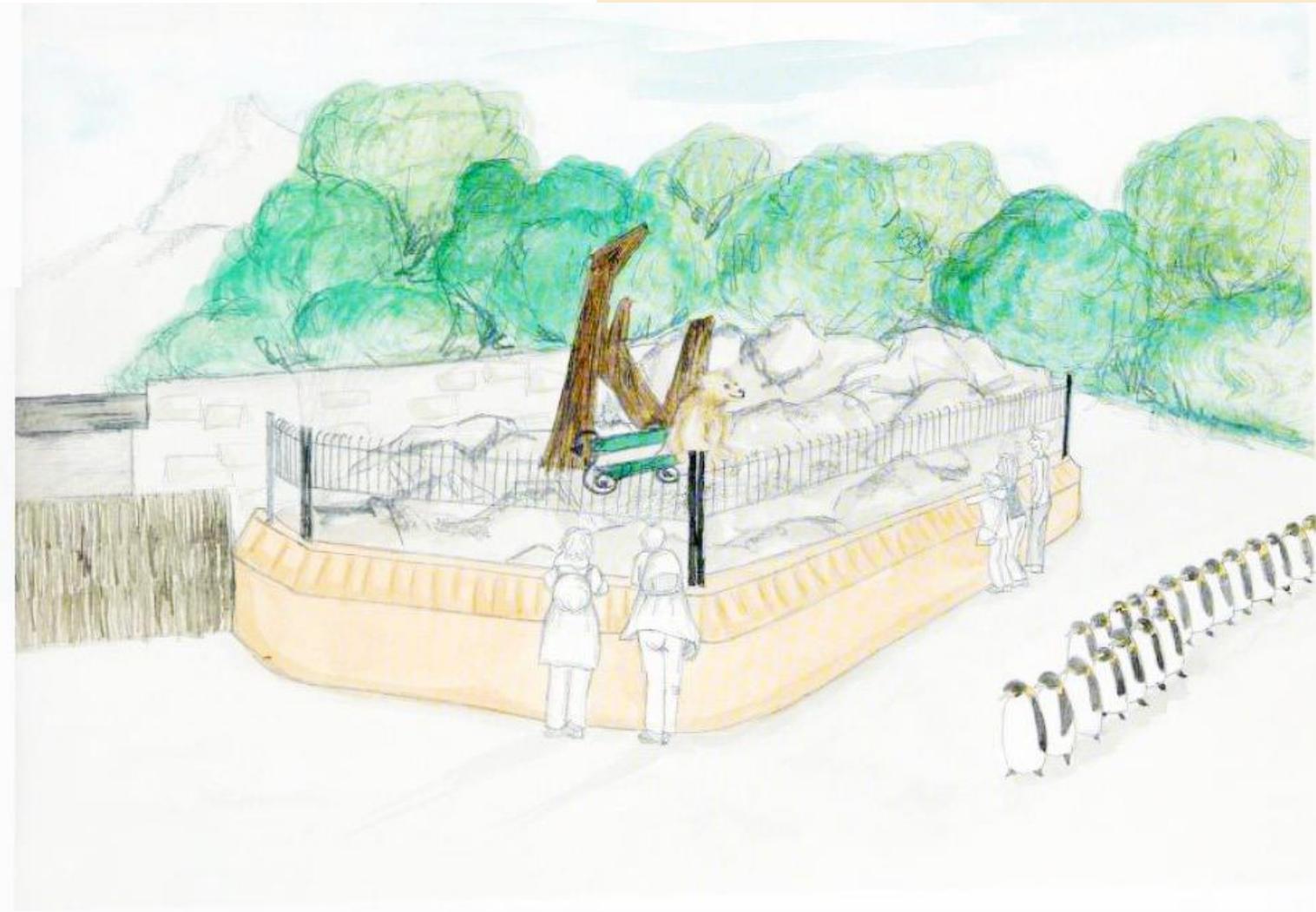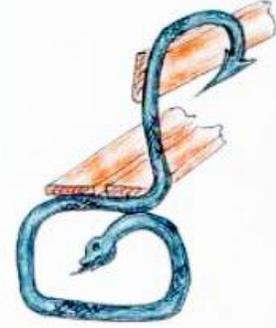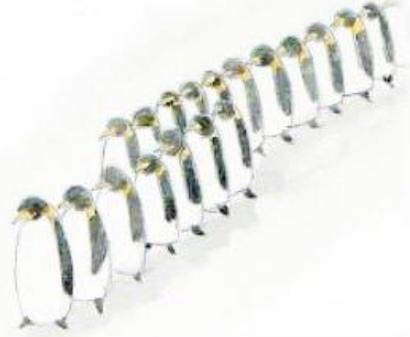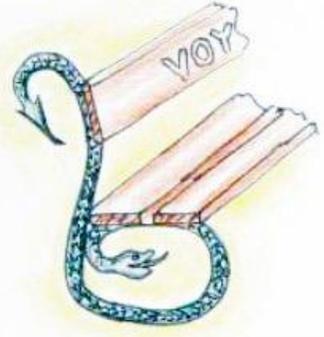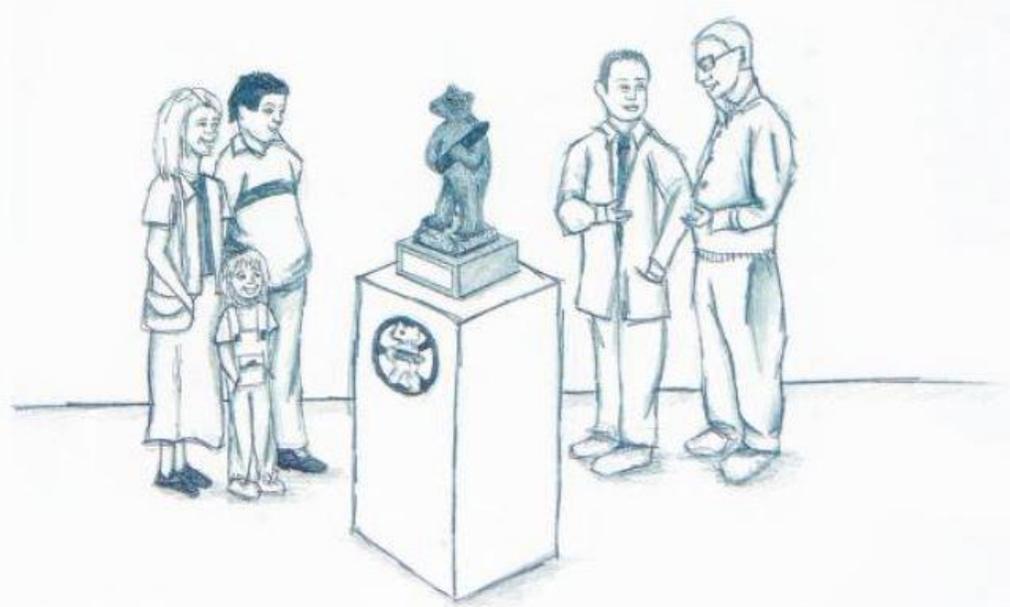
वोयटेक के तमाम अनुभव उन लोगों को याद हैं जो उससे मिले थे.

इस असाधारण भालू की याद में लंदन और ओटावा में उसकी मूर्तियाँ

भी स्थापित की गईं.